PHILOSOPHY

PG, Paper VIII (UG Paper I & VIII)

Dr. S.K. Singh
Mob.- 9431445995

Brahman (ब्रह्म) - रामानुज

रामानुज के दर्शन में ब्रह्म

→ रामानुज के दर्शन में ब्रह्म परम यथार्थता (Absolute Reality) है। उनके ब्रह्म-विचार को विशिष्टाद्वैतवाद कहते हैं क्योंकि इन्होंने अद्वैत तत्त्व का समर्थन तो किया है किन्तु विशेष अर्थ में। यह अद्वैत तत्त्व ईश्वर है।

→ रामानुज के अनुसार द्वैत रहित अद्वैत और अद्वैत शून्य द्वैत दोनों ही काल्पना है क्योंकि भेद के बिना अभेद और अभेद के बिना भेद सिद्ध नहीं होता। अतः दोनों सदा साथ रहते हैं और इनमें पार्थक्य संभव नहीं है।

→ रामानुज के अनुसार अभेद भेद के द्वारा, भेद के कारण और भेद में ही संभव है। अतः वे अभेद और भेद की दोनों ही निरपेक्ष कोटियों को अस्वीकार करते हैं और इनके बजाय भेदान्वित अभेद (Identity in difference) को मान्यता देते हैं।

→ रामानुज का ब्रह्म द्वैत विशिष्ट अद्वैत है; यहाँ द्वैत (भेद) विशेषण है और अद्वैत (अभेद) विशेष्य है; और विशेषणयुक्त विशेष्य ही विशिष्ट है और यह अद्वैत है जो सदा द्वैत से विशिष्ट रहता है। — विशिष्टाद्वैत।

→ रामानुज के अनुसार द्वैत और अद्वैत में अपृथक्सिद्ध सम्बन्ध है क्योंकि वह एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता तथापि दोनों समान स्तर के नहीं हैं अद्वैत मुख्य है और द्वैत गौण है। अद्वैत आत्मरूप है, द्रव्य है, अंगी है; द्वैत शरीररूप है, गुण है, अंग है। अद्वैत विशेष्य है, द्वैत विशेषण है। द्वैत अद्वैत का विशेषण बनकर भी उससे अपृथक रहता है। यह अपृथक्सिद्ध आन्तरिक अपार्थक्य संबंध है।

→ रामानुज चित्, अचित् और ईश्वर — इन तीन तत्त्वों को (तत्त्व-त्रय) मानते हैं। चित् चेतन भोक्ता जीव है, अचित् जड़ भोग्य जगत है। ईश्वर दोनों का अन्तर्यामी है। चित् और अचित् दोनों नित्य और परस्पर स्वतंत्र द्रव्य हैं किन्तु दोनों ईश्वर पर आश्रित हैं और सर्वथा उनके अधीन हैं। दोनों स्वयं द्रव्य हैं, किन्तु ईश्वर के गुण या धर्म हैं। दोनों ईश्वर के शरीर भी हैं और ईश्वर उनका अन्तर्यामी आत्मा है। जीव अपने शरीर का आत्मा है किन्तु ईश्वर का शरीर है जो जीव का भी आत्मा है।

→ ब्रह्म या ईश्वर में सजातीय और विजातीय भेद नहीं है क्योंकि ईश्वर के समान या उससे कोई स्वतंत्र तत्त्व नहीं है। किन्तु ईश्वर में स्वगत भेद विद्यमान है क्योंकि उनका शरीर नित्य एवं परस्पर भिन्न चित् और अचित् तत्त्वों से निर्मित है। चिदचित् (चित् और अचित्) ईश्वर के विशेषण, धर्म, गुण, प्रकार, अंश, अंग, शरीर, नियाम्य, धार्य और शेष है, तथा ईश्वर उनके विशेष्य, धर्मी, द्रव्य, प्रकारी, अंगी, शरीरी (आत्मा), नियन्ता, धर्ता और शेषी है। ईश्वर का अपने चिदचित् (चित् और अचित्) चिदचित्-शरीर (चिदचित् → चित् + अचित्) से संबंध स्वाभाविक और सनातन है।

→ यदि मनुष्य इन तीनों (चित्, अचित् और ईश्वर) तत्त्व को जान ले तो वह ब्रह्म को जान लेता है। इसका साधन भक्ति है।

Scanned with CamScanner